International Journal of Applied Research 2017; 3(7): 1486-1488

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(7): 1486-1488
www.allresearchjournal.com
Received: 03-05-2017
Accepted: 09-06-2017

डॉ. महेश चन्द्र चौधरी
एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग,
नारायण कॉलेज, शिकोहाबाद,
उत्तर प्रदेश, भारत

Correspondeing Author:
डॉ. महेश चन्द्र चौधरी
एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग,
नारायण कॉलेज, शिकोहाबाद,
उत्तर प्रदेश, भारत

जनसंचार माध्यमों में हिन्दी की दशा और दिशा

डॉ. महेश चन्द्र चौधरी

सारांश
भूमंडलीकरण की प्रक्रिया में नयी–नयी प्रेरणाएँ, परिकल्पनाएँ एवं प्रवृत्तियाँ, मानव समाज के साथ–साथ सभ्यता, संस्कृति एवं भाषा को आंदोलित कर रही है। भूमंडलीकरण की आंधी में जनसंचार के विभिन्न माध्यमों द्वारा राष्ट्रभाषा हिन्दी के आस्तित्व पर प्रहार हो रहा है। हमारे सम्मुख प्रश्न यह है कि बहुराष्ट्रीय व्यावसायिकता की दौड़ में हम हिन्दी की अस्मिता कैसे संरक्षित रखें ?
आधुनिक समय में हिन्दी के सामने जनसंचार माध्यम द्वारा बाजारवाद, समाजवाद, संस्कृतिवाद, सम्प्रदायवाद, भावशून्यता एवं भाषावाद की चुनौतियाँ खड़ी हैं। आज जनसंचार के जितने माध्यम हैं उतने ही हिन्दी के रूप हैं – संस्कृतनिष्ठ हिन्दी, साहित्यिक हिन्दी, प्रयोजनमूलक हिन्दी, अवधी, बघेली एवं मालवी मिश्रित हिन्दी, एवं भारतीय विदेशी भाषाओं से संबंधित हिन्दुस्तानी हिन्दी। आज हिन्दी विभिन्न क्षेत्रों जैसे प्रशासन, विधि, चिकित्सा, न्यास, शिक्षा तथा तकनीकी एवं जनसंचार के साथ–साथ जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में प्रयुक्त हो रही है। दृश्य की प्रस्तुति भी अपने आप में एक भाषा है। संस्कृति, परिवेश एवं इतिहास को केवल शब्दों से नहीं, बल्कि उसकी दृश्य योजना से भी सार्थक अभिव्यक्ति मिलती है। ई–मेल और इंटरनेट की भाषा, कम्प्यूटर और कम्प्यूनिकेशन की भाषा हिन्दी होने पर वह अन्तर्राष्ट्रीय पहचान की हकदार हो जाती है।

कूटशब्द : जनसंचार, भूमंडलीकरण हिंदी, संप्रेषण, संस्कृति वैश्विक, मीडिया।

प्रस्तावना
जनसंचार माध्यम विज्ञान की प्रगति और तकनीकी विकास के साथ–साथ मानव जीवन में परिवर्तन के प्रमुख शक्तिशाली साधन बन गये हैं। सूचना और विचार संप्रेषण से मानव–मन को प्रभावित करने के लिए जनसंचार माध्यम अद्भुत शक्ति रखते हैं और इसी कारण इनका अपना महत्व बढ़ गया है। जनसंचार माध्यमों ने समस्त भूमंडल को अपने शिकंजे में जकड़ लिया है। भारत भी संचार माध्यमों से प्रभावित हुआ है। स्वातंत्र्योत्तर भारत ने प्रायः हरेक क्षेत्र में विकास की ओर अपने कदम बढ़ाये हैं। वह आर्थिक, सामाजिक अथवा औद्योगिक विकास की बात हो या संचार प्रणाली के विकास की बात ही क्यों न हो, स्वातंत्र्योत्तर भारत ने अभूतपूर्व प्रगति हासिल की है। जहाँ तक जनसंचार माध्यमों का प्रश्न है वर्तमान में इसकी उपयोगिता को लेकर कोई विवाद नहीं है, बल्कि यह कहा जा सकता है कि जनसंचार माध्यमों के बिना आधुनिक जीवन फीका सा लगता है। कहते हैं जनसंचार माध्यम अभिव्यक्ति का सम्पूर्ण विज्ञान है, आदर्श कला है, उत्तम व्यवसाय है और मानव चेतना को उदीप्त करने का सशक्त साधन है। युगबोध के प्रमुख तत्व के साथ ही मानवता के विकास और विचारोत्तेजन का राजमार्ग वही जनसंचार है, जिससे जीवन अनुप्राणित होता है। समाज, संस्कृति, साहित्य, दर्शन, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के समय में जीने के लिए जनसंचार माध्यमों का ज्ञान अपरिहार्य है। आज ज्ञान ही एक सबसे बड़ी शक्ति है तो विज्ञान विशिष्ट शक्ति है। इस प्रकार जनसंचार माध्यमों का महत्व स्वयं स्पष्ट है।

जनसंचार माध्यम और हिंदी
ज्ञान, अनुभव, संवेदना, विचार, अभिनव परिवर्तनों की साझेदारी ही संचार है। जनसंचार, साधारण जनता के लिए होता है। इससे संदेश तीव्रतम गति से गंतव्य तक पहुंचता है। इसका रूप लिखित या मौखिक हो सकता है। इसके द्वारा जनसामान्य की प्रतिक्रिया का पता चल जाता है एवं इसका प्रभाव बहुत गहरा होता है।
हिन्दी की संप्रेषण क्षमता अतुलनीय है। संप्रेषण हमारे वातावरण के साथ शारीरिक, मानसिक और सामाजिक स्तर पर एक प्रकार की अंतक्रिया है। मीडिया के रूप में प्रचलन में है–प्रिन्ट मीडिया, दूसरा है–इलेक्ट्रॉनिक मीडिया। आजकल हिन्दी का प्रसार वैश्विक व्यवसायीकरण के कारण निरंतर हर तरफ हो रहा है एवं संख्या बल के आधार पर हिन्दी आर्थिक एवं वाणिज्यिक कार्यों की भाषा बनती जा रही है तथा ये विश्व–भाषा बन रही है।

प्रिंट मीडिया में समाचार पत्र एवं पत्रिकाएं आती हैं। प्रिंट मीडिया ने भारत के स्वतंत्रता आंदोलन को हिन्दी के माध्यम से बहुत गति प्रदान की थी। स्वतंत्रता के बाद समाज में राजनैतिक जागृति, सामाजिक, धार्मिक, आपराधिक, आर्थिक गतिविधियों एवं घटनाओं के प्रति जन सामान्य की जिज्ञासा में वृद्धि हुई। इसके साथ ही हिन्दी को राजभाषा घोषित करने के कारण हिन्दी समाचार पत्र एवं पत्रिकाओं का निरंतर प्रसार बढ़ता गया। इनके कई संस्करण छपने लगे। पत्रिकाओं ने समाज में साहित्यिक चेतना संप्रेषित की। अधिकांश समाचार पत्रों में पृथक से साहित्यिक पृष्ठों के प्रकाश द्वारा हिन्दी साहित्य की विभिन्न विधाओं में श्रेष्ठ रचनाओं का प्रकाश किया जाने लगा। विदेशों में सभी प्रमुख शहरों से हिन्दी पत्रिकाएं निरंतर छपने लगी, जिससे हिन्दी को बल मिला।

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में आकाशवाणी, दूरदर्शन एवं इन्टरनेट पर भी हिन्दी का वर्चस्व बढ़ता जा रहा है। हिन्दी के प्रयोजनमूलक रूप का निरंतर विकास हो रहा है। 1926 से रेडियो का भारत से प्रसारण शुरु किया गया, यह पहले गैर–सरकारी संस्था के पास था, बाद में 1930 से इसे भारत सरकार ने अपने अधीन कर लिया।

1949 से हिन्दी प्रसार के लिए अहिन्दी भाषा केन्द्रों से हिन्दी प्रशिक्षण के कार्यक्रम शुरु किए गए। अब कई केन्द्रों से हिन्दी के व्यावहारिक प्रयोग का ज्ञान बढ़ाने के लिए हिन्दी के पाठ निरंतर प्रसारित किये जाते हैं। रेडियो नाटक लेखन बीसवीं सदी में एक सशक्त साहित्य विधा के रूप में उभरा और 21वीं सदी में तेजी से बढ़ रहा है। आकाशवाणी केन्द्रों में निरंतर हिन्दी में वार्ताएं प्रसारित की जाती हैं। कवि सम्मेलनों का भी आयोजन किया जाता है। आकाशवाणी की देश की 95 प्रतिशत जनसंख्या तक पहुंच है। इसके विविध भारती एवं एफ0एम0 चौनल, चित्रपट संगीत हिन्दी के प्रसार में अपूर्व योगदान कर रहे हैं। विश्व के कई प्रमुख देशों के आकाशवाणी कंपनियां जैसे बीबीसी लंदन, वायस ऑफ अमेरिका, रेडियो सीलोन, जर्मन रेडियो व अन्य केन्द्रों से हिन्दी में समाचार व हिन्दी फिल्मों के गाने वार्ताएं प्रसारित होती रहती हैं, इसलिए कहा जाता है कि हिन्दी का सूर्य कभी नहीं डूबता, यह विश्व भाषा बनकर रहेगी।

हिन्दुस्तान में दूरदर्शन का प्रादुर्भाव 70 के दशक से हुआ। इसे सूचना देने, ज्ञान का प्रसार करने एवं मनोरंजन का साधन मानकर बढावा दिया गया। हिन्दी की साहित्यिक कृतियों में उपन्यास, नाटक, कविता, कहानी, कवि सम्मेलनों आदि के माध्यम से दूरदर्शन ने हिन्दी के प्रचार–प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। रामायण, महाभारत आदि धारावाहिकों द्वारा हिन्दी घर–घर पहुंच गई है।

अंग्रेजी चौनल धीरे–धीरे विज्ञापन के लिए हिन्दी को अपना रहे हैं। विज्ञान पर आधारित कार्यक्रम, नेशनल ज्योग्राफिक एवं डिस्कवरी भी हिन्दी में प्रसारित की जा रही है। फिल्मों के द्वारा हिन्दी की लोकप्रियता सातवें आसमान पर पहुंची है। हिन्दी फिल्मों के विदेशों के अधिकार हिन्दुस्तान के अधिकार से ज्यादा राशि प्राप्त कर रहे हैं। कम्प्यूटर एवं इन्टरनेट पर हिन्दी के ब्लॉग बनाये जा रहे हैं, और इनकी संख्या तेजी से बढ़ रही है।इस तरह, हिन्दी जनचेतना को स्वर देने में सर्वाधिक समर्थ होकर धीरे–धीरे विश्व में अपना सम्मानजनक स्थान बनाने की ओर अग्रसर हो रही है।

जनसंचार के सभी माध्यमों में हिंदी ने अपनी जबर्दस्त पकड़ बना ली है। चाहे वह हिन्दी के समाचार पत्र हो, रेडियो हो, दूरदर्शन हो, निजी समाचार चौनल्स हों, सोशल मीडिया के माध्यम हो, हिंदी सिनेमा हो या विज्ञापन हो–सभी जगह हिन्दी छायी हुई है। वर्तमान समय में हिन्दी को वैश्विक संदर्भ प्रदान करने में उसके बोलने वालों की संख्या, हिदी फिल्में, पत्र पत्रिकाएँ, विभिन्न हिन्दी चौनल, विज्ञापन एजेंसियों, हिन्दी का विश्वस्तरीय साहित्य तथा साहित्यकार आदि का विशेष योगदान तो है ही इसके साथ ही विश्व पटल पर बड़ें मंचों पर हाल के वर्षों में वर्तमान प्रधानमंत्री द्वारा मजबूती के साथ हिंदी में अपने विचारों को रखने की प्रभावी शैली ने भी उसके मान–सम्मान में इजाफा किया है और सबसे महत्वपूर्ण कहें तो हिंदी को विश्वभाषा बनाने में इंटरनेट ने सबसे बड़ी भूमिका निभाई है।

हिंदी आज अभिव्यक्ति का सब से सशक्त माध्यम बन गई है। हिंदी चौनलों की संख्या लगातार बढ़ रही है। बाजार की स्पर्धा के कारण ही सही, अंग्रेजी चौनलों का हिंदी में रूपांतरण हो रहा है। इस समय हिंदी में भी एक लाख से ज्यादा ब्लॉग सक्रिय हैं। अब सैकड़ों पत्र–पत्रिकाएं इंटरनेट पर उपलब्ध हैं।

हिंदी के वैश्विक स्वरूप को संचार माध्यमों में भी देखा जा सकता है। संचार माध्यमों ने हिंदी के वैश्विक रूप को गढ़ने में पर्याप्त योगदान दिया है। भाषाएं संस्कृति की वाहक होती हैं और संचार माध्यमों पर प्रसारित कार्यक्रमों से समाज के बदलते सच को हिंदी के बहाने ही उजागर किया गया। डिजिटल दुनिया में हिंदी की मांग अंग्रेजी की तुलना में पांच गुना ज्यादा तेज है। अंग्रेजी की तुलना में हिंदी 5 गुना तेजी से बढ़ रही है। भारत में हर पांचवा इंटरनेट प्रयोगकर्ता हिंदी का उपयोग करता है। देश में जहाँ हिंदी सामग्री की डिजिटल मीडिया में खपत 94 फीसद की दर से बढ़ी है, वहीं अंग्रेजी सामग्री की खपत केवल 19 फीसद की दर से ही बढ़ी

जनसंचार माध्यम में हिंदी की दशा और दिशा

स्वातंत्र्योत्तर भारत में जनसंचार माध्यमों का अभूतपूर्व विकास हुआ है। जहाँ तक स्वातंत्र्योत्तर भारत में जनसंचार माध्यम और हिन्दी की दशा और दिशा का प्रश्न है, हिन्दी को हमारे भारतीय संविधान में राजभाषा का दर्जा प्राप्त हुआ है। जनसंचार माध्यमों की भाषा के रूप में हिन्दी को महत्व प्राप्त हुआ है। इतना ही नहीं हिन्दी भाषा का एक नवीन रूप विकसित हुआ है, जिसे आजकल प्रयोजनमूलक हिन्दी के नाम से जाना जाता है। हिन्दी ने अपनी सार्थकता सिद्ध कर दी है।

स्वातंत्र्योत्तर भारत में प्रचलित प्रमुख संचार माध्यमों को इस प्रकार से निम्नांकित रूप में विभाजित किया जा सकता है –

1. परंपरागत जनसंचार माध्यम
2. इलेक्ट्रॉनिकजनसंचार माध्यम
3. मुद्रित जनसंचार माध्यम
4. मौखिक जनसंचार माध्यम और
5. बाह्य जनसंचार माध्यम।

जनसंचार माध्यमों को कुछ लोग श्रव्य माध्यम तथा दृश्य–श्रव्य माध्यम के अंतर्गत भी विभाजित करते हैं। जैसा कि पहले भी कहा गया है कि हिन्दी को भारतीय संविधान में राजभाषा का सम्मान प्राप्त हुआ है। इतना ही नहीं, हिन्दी भाषा शताब्दियों से भारत की संपर्क भाषा के रूप में प्रचलित रही है और उसे राष्ट्रभाषा का दर्जा भी बहुत पहले से प्राप्त है और आजादी के बाद राष्ट्रीय अस्मिता का कारण बनी हुई है। अतः यह स्वाभाविक है कि स्वातंत्र्योत्तर भारत में विकसित संचार माध्यमों ने हिन्दी को अपनाया और प्रगति की ओर हिन्दी भाषा अपने कदम आगे बढ़ा रही है।

आज का युग वैश्वीकरण का युग है। इस युग मे सारा संसार मुट्ठी भर हो रहा है। इसमें संचार माध्यमों का विशिष्ट योगदान है। इसमे जन भाषा हिन्दी की अहम भूमिका है। आधुनिक युग में समूह माध्यम के विकास के साथ हिन्दी ही नहीं सारी भारतीय भाषाओं का स्वरूप बदल रहा है। जो भाषाएँ भारत में केवल काव्य भाषा के रूप में साहित्य में सीमित रह गयी थी आज उनमें बोलचाल के रूप में विकास पाया। भाषा का क्षेत्र काफी विस्तृत हो गया है, वे ज्ञान–विज्ञान के प्रसार का, माध्यम बनकर वैचारिक और विज्ञानोन्मुखी हो रही है। अतः भाषा के स्वरूप और उसकी शब्दावली में भी काफी बदलाव आ रहा है।

मीडिया से एक ग्लोबल संस्कृति का निर्माण हो रहा है इससे एक ओर भारतीयता, भारतीय संस्कृति को धक्का पहुँच रह है, तो दूसरी ओर आर्थिक प्रगति के कारण विश्व में भारत की पहचान बढ़ रही है। आज भारतीय प्रगति पथ में उन्मुख हैं उसका झुकाव अंग्रेजी भाषा की और अधिक है। हिन्दी और देशी भाषाएँ राजभाषा होने पर भी अधिकतर प्रशासनिक व्यवहार अंग्रेजी में होने से देश की भाषाओं की प्रगति साहित्य तक ही सीमित हो गई है। स्वतंत्रता के इतने वर्षों बाद भी देश में कई क्षेत्रों में अंग्रेजी के स्थान पर भारतीय भाषाओं को शिक्षा का माध्यम नहीं बना पा रहे हैं। समाचार–पत्रों को ही लें अधिक प्रसार की पत्रिका अंग्रेजी की ही है। एक ओर अंग्रेजी का विरोध हो रहा है तो दूसरी ओर अंग्रेजी का मोह बढ़ रहा है। पहले हिन्दी प्रचार संस्थाएं जगह–जगह देखने को मिलती थी, आज 'अंग्रेजी लिखो' संस्थाएं सिर उठा रही हैं। यहाँ तक कि टी.वी. में विज्ञापन भी अंग्रेजी मिश्रीत भाषा है।

जनसंचार माध्यमों में हिन्दी की दशा अच्छी नहीं है उसकी शैली में असहजता आ गयी है। कभी–कभी लगता है कि वह एक अनूदित भाषा है। आज का युग गति का है। किसी को न फुरसत है न व्यवथान है। अतः किसी में भी गहराई नही है। भाषा भी इंस्टेट हो रही है। जनसंचार माध्यमों द्वारा हिन्दी भाषा का एक व्यावहारिक रूप उभर रहा है। इसका प्रभाव अन्य भाषाओं पर भी पड़ रहा है जैसे चक्कर, नौकरी, धरना, घेराव, चड्डी दोस्त, ताजा, मजा, मौज आदि।

आम लोग पहले से अधिक हिन्दी को सीखने–समझने और व्यवहार करने लगे हैं। इसके पीछे कारण है लोगों का देश भर में आना–जाना, साधन–संपर्क आदी का बढ़ना। हिन्दी पत्रिकाएं सर्वत्र मिल रही हैं। कम्प्यूटर और इंटरनेट प्रसार का एक अच्छा साधन बना है। भारतीय साफ्टवेयर के कारण प्रिंट मीडिया सुलभ हो गया है। हिन्दी की पुस्तके अहिन्दी प्रदेशों में 'अच्छे गेटप' में छप रही है। प्रिंट मीडिया में क्रांति हो रही है। अब हिन्दी भाषा का एक सामान्य, व्यावहारिक राष्ट्रीय रूप उभर रहा है। उसकी शब्दावली का विकास हो रहा है। वास्तव में भाषा के दो रूप होते हैं, एक शिष्ट भाषा का रूप और दूसरा जन भाषा का रूप। ये दोनों रूप साथ–साथ में विकसित होते रहते हैं। जनतंत्र में जनभाषा का रूप विकसित होना स्वाभाविक भी है। विद्वानों, वैज्ञानिकों आदि की अभिव्यक्ति की भाषा शिष्ट है, जनता के व्यवहार, व्यापार, खेलकूद, जनसंपर्क आदि की भाषा बोलचाल की है। जनभाषा या बोलचाल की भाषा का स्वरूप अपभ्रष्ट ही होता है। अब इसी से एक मानक रूप का विकास होता है।

इस प्रकार जनसंचार में अंग्रेजी के प्रभाव के बीच से हिन्दी का प्रसार भी तेजी से बढ़ रहा है। हिन्दी का व्यावहारिक पक्ष प्रबल हो रहा है। दक्षिण में हिन्दी की दशा बहुत सुधरी है। हिन्दी को संस्कृतनिष्ठ रूप से बाहर आकर अब राष्ट्रीय स्तर पर एक सामाजिक संस्कृति, सभ्यता के संवाहक के रूप में बोलचाल, सरल–सुबोध रूप को अपनाना है। जैसे अभिजात्य भाषा फ्रेंच के प्रभाव से मुक्त होकर अंग्रेजी व्यावहारिक जनभाषा बनकर विश्व भर में फैल गयी। आज के वैश्वीकरण की दौड़ में भी हिन्दी पीछे न रह जायेगी।

हर विषय में उसकी चुनौतियों और अवसर निहित होते हैं। सूचना और संचार क्रांति महज एक तकनीकी प्रगति न होकर एक व्यापक प्रभावी घटना है। समाज और जीवन का कोई भी पहलु इसमें अछूता नहीं है। भाषा भी अपवाद नहीं है। इस दौर में भाषा के सामने अवसर भी है और चुनौतियाँ भी है। नये विश्व की नई संरचना में आधुनिक जनसंचार माध्यमों का सीधा हस्तक्षेप है। आज का युग भूमण्डलीकरण जनसंचार का युग है। वर्तमान समय में बदलते वैश्विक परिदृश्य में संचार माध्यमों एवं प्राद्यौगिकी के विभिन्न स्त्रोतों ने तथा नित नए प्रयासों ने पूरे विश्व को ग्लोबल विलेज की परिकल्पना के रूप में साकार किया है।

स्वतंत्रता के पश्चात् हमने बहुत सी उपलब्धियाँ अर्जित की हैं। अधुनातन जनसंचार माध्यमों ने न सिर्फ परम्परागत माध्यमों को बदलाव के लिए मजबूर किया है, वरन् नवाविष्कृत माध्यमों को भी अपने कलेवर पर पुनर्विचार करने के लिए तैयार किया है। समाचार पत्रों के बदलाव हमारे सामने हैं, जिसमें प्रस्तुति, दृश्य और भाषा बदल रही है। कम्प्यूटर एवं इंटरनेट के असीमित विस्तार के दौर में हिन्दी के विकास के नये मौके सामने आ रहे हैं। हिन्दी साहित्य में विभिन्न भाषाओं का कम्प्यूटर अनुकूलन तेजी से बढ़ रहा है। भारत सरकार के कई मंत्रालयों और सूचना से जुड़े उच्च शोध संस्थानों ने इक्कीसवीं सदी की जरूरतों के अनुरूप हिन्दी साफ्टवेयर उपकरणों के विकास का काम हाथ में लिया है। हाल ही में सी–डेक, मॉड्यूलर, इन्फोटेक. साइबर स्केप, मल्टीमीडिया लिमिटेड एवं आई. आई. टी. हैदराबाद आदि के सहयोग से सूचना प्रद्यौगिकी मंत्रालय द्वारा प्रस्तुत आधुनिक हिन्दी साफ्टवेयर उपकरण महत्वपूर्ण उपलब्धि के रूप में हमारे सामने हैं।

निष्कर्ष

आज का जनसंचार बहुआयामी हैं। सभी का इसके प्रति रूझान बढ़ रहा है। इसमें सभी लाभ उठा रहे हैं। आज हिन्दी सभी क्षेत्रों जैसे प्रशासन, विधि, चिकित्सा, न्याय, शिक्षा तथा तकनीकी एवं जनसंचार के साथ–साथ जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में प्रयुक्त हो रही है। दृश्य की प्रस्तुति भी अपने आप में एक भाषा है। संस्कृति, परिवेश एवं इतिहास को केवल शब्दों से नहीं बल्कि उसकी दृश्य योजना से भी सार्थक अभिव्यक्ति मिलती है। ई–मेल और इंटरनेट की भाषा, कम्प्यूटर और कम्युनिकेशन की भाषा हिन्दी होने पर वह अन्तर्राष्ट्रीय पहचान की हकदार हो जाती है।

अंततः ये पूरे आत्म विश्वास के साथ कह सकते हैं कि आने वाले समय में हिन्दी जनसंचार माध्यम के रूप में वैश्विक स्तर पर और मजबूती से अपने कदम आगे बढ़ाने जा रही है।

सन्दर्भ

1. सुधीश पचौरी–हिन्दी का नया जनक्षेत्र
2. सुधीश पचौरी–साइबर–स्पेस और मीडिया
3. लक्ष्मीकांत पाण्डेय–संचार माध्यमों में हिन्दी का प्रयोग
4. रेश्मा नदाफ–इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और हिन्दी
5. चन्द्र कुमार–जनसचार माध्यमों में हिन्दी
6. संचार माध्यम एवं संचारक, भारतीय जनसंचार संस्थान, नई दिल्ली।
7. विदुर (हिन्दी एवं अंग्रेजी) प्रेस इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया, नई दिल्ली।
8. संचार श्री. पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखन
9. हंस का टेलीविजन विशेषांक, जनवरी 2007 ।
10. मीडिया विमर्श, डॉ0 श्रीकांत सिंह, रायपुर, छत्तीसगढ़।